रामदेव धुरंधर का श्रीना. एस द्वारा लिया गया साक्षात्कार

'रामदेव धुरंधर' मॉरिशस के एक सशक्त साहित्यकार है। अभिमन्यु अनत के बाद साहित्य में अधिक संवेदना और कला की दृष्टि से उनका ही उल्लेख किया जाता है। मॉरिशस के व्यक्ति, समाज और मानव जीवन रामदेव धुरंधर के साहित्य का केंद्र बिंदु है। मुख्यतः टूटते मान:वीय रिश्तें, आधुनिकता, सांस्कृति, प्रकृति एवं परम्परागत जीवन आदि से संपन्न उनका साहित्य और मॉरिशस के बारे में कोच्चिन विज्ञान व प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालय, केरल के शोधार्थी **श्रीना.एस** द्वारा किया गया साक्षात्कार।

प्रश्न- समकालीन संदर्भ में मॉरिशस के भारतीय प्रवासियों को किन-किन परिस्थितियों से गुज़रना पड़ता है? उनकी प्रमुख समस्याएं क्या-क्या है?

- भारतीय मजदूरों की पहली खेप सन् 1834 में जहाज द्वारा मॉरिशस पहुँची थी। तब से अब तक लगभग दो सौ साल हुए, लेकिन ऐसा नहीं कह सकते उनसे जुड़ी हुई परेशानियाँ उनकी संतानों के समय में खत्म हुई हों। सन् 1968 में मॉरिशस अंग्रेजों के चंगुल से स्वतंत्र हुआ। इससे पहले भारतीय मन के लोग फ्रांसीसी गोरे मालिकों की ओर से सताये जाते थे। बाद में देश स्वतंत्र हुआ तो अपने ही खून के लोगों के हाथ में देश की बागडोर आयी, लेकिन सत्ता के मोह में पड़ कर वे अपने हो लोगों को भूलने लगे।

  ऐसा नहीं कह सकते भारतीय वंशजों पर इस तरह का दबाव हो कि उन्हें भारतीय संस्कार छोड़ना पड़े या उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर किसी प्रकार से कष्ट पहुँचाया जाता हो। यहाँ सभी समान हैं। कानून सब के लिए एक है। नौकरी चाहें तो इसके लिए प्रमाण पत्र से योग्य हो जायें नौकरी जरूर मिल जायेगी। पर देश में जो सूक्ष्म समस्याएँ हैं उन्हें समझने के लिए सूक्ष्म दृष्टि होनी चाहिए। बात यह है यहाँ भीतर एक सूक्ष्म साजिश चलती रहती है। यह गोरों की ओर से चलायी हुई साजिश है। गोरों का दबदबा पूरे देश में बना होता है, लेकिन गोरे स्वयं कानून की जकड़ में होते हैं जो उन्हें स्वीकार्य होता नहीं है। इसी कारण से वे भारतीय वंशजों पर किसी न किसी प्रकार की फाँस डालते रहते हैं और बहुत हद तक वे सफल हो भी जाते हैं। पर मैं इसके बावजूद इस तरह से कहूँगा यह देश फिर भी हमारा है। हमारे पूर्वज एक अच्छा देश हमें दे कर संसार से गये हैं। हमें उनसे कोई शिकायत नहीं है। शिकायत है तो बस वर्तमान से, लेकिन यह भी कोई खास शिकायत नहीं है।

प्रश्न- कई साल पहले गिरमिटिया मजदूरों के रूप में आए हुए मजदूरों ने जो कुछ अनुभव किया इससे आज की स्थिति में क्या- क्या बदलाव आया है? भारत के मज़दूर जीवन वहां से कैसे अलग होते है ?

- प्रश्न का अंतिम भाग है भारत और मॉरिशस के मजदूरों में कितना फर्क होता है। भारतीय मज़दूर मेरे लिए अपरिचित होने से मैं इस पर कुछ कह नहीं पाऊँगा। मैं मॉरिशस की ही बात करूँ तो ऐसा है मॉरिशस में भारत के पुराने मज़दूर अब तो रहे नहीं। बस उनके बारे में सुनी सुनायी बातें हमारे साथ हैं। आज मेरे देश में मज़दूर किस तरह से अपना जीवन यापन करते हैं और उनका जीवन कैसा है इस पर मैं खुले मन से बात कर सकता हूँ। बल्कि खेतों से मेरा भी संबंध रहा है इसलिए मैं अपने अनुभव से भी बात कर सकता हूँ। भारतीयों को यहाँ ईख के खेत में काम करने के लिए लाया गया था। पर यह समझ लेना होगा भारतीयों से पहले यहाँ ईख के खेत होते नहीं थे। भारतीयों को ही यह श्रेय जाता है उन्होंने खेत की यहाँ शुरुआत की और वह एक परंपरा बन गयी जो आज भी कायम है। भारतीयों से यहाँ ईख के खेतों की नींव पड़ी इसलिए मैं लिखता हूँ इस देश की धरती भारतीय मजदूरों की कुदाल से पहली बार स्पंदित हुई थी। मॉरिशस में अब तरह-तरह के कारोबार चलने से मजदूरों की भी अनेक इकाइयाँ होती हैं। यहाँ महिलाएँ फैक्ट्री में काम करती हैं। टूरिस्ट होटल की जब से यहाँ नींव पड़ी तब से ले कर अब तक उसे बहुत विस्तार मिल चुका है। हजारों लोग टूरिस्ट क्षेत्र से जुड़े हुए हैं। एक बात अच्छी है सब पर कानून की पकड़ है। यदि कोई मौलिक अपने मज़दूर को किसी प्रकार का कष्ट दे और वह पुलिस स्टेशन में शिकायत लिखवा दे तो उस मालिक को इसकी सज़ा भुगतनी पड़ती है। इस कोण से मैं कहूँगा मेरे देश में मजदूरों का जीवन अच्छा ही है। पर जो अच्छा नहीं है वह यहाँ की असमानता है। मज़दूर और धनवान एक ही दाम से रोटी खरींदेगे, लेकिन एक के पास विपुल पैसा है और के पास पैसे के बहुत कमी है। अभी के लिए मॉरिशस में यही सब से बड़ा रोग है। तब तो धनवान और धनवान होते चले जा रहे हैं और गरीब नीचे लुढ़कने की अपनी नियति से जूझ रहे हैं।

प्रश्न- मॉरिशस के समकालीन हिंदी साहित्यकारों के लिए भारत से किस तरह की सहायता एवं प्रोत्साहन मिलते हैं?

- मॉरिशस में हिन्दी का लेखन अपनी सामर्थ्य के आधार पर होता है। यह प्रश्न मेरे लिए जटिल भी है और इसका उत्तर मैं थोड़ी आक्रामकता से ही करूँगा। भारतीय साहित्यकारों से हमें किसी

प्रकार की सहायता मिलती नहीं है। वे हमें सहायता दे भी नहीं सकते, क्योंकि उनकी अपनी ही समस्याएँ तमाम हैं। भारतीय लेखकों से एक सहायता मैं मानूँ तो वह यह है फेसबुक के माध्यम से उनकी बहुत सारी रचनाएँ पढ़ने को मिल जाती हैं। यहाँ मैं केवल अपने लिए कह रहा हूँ। आज के भारतीय लेखकों को पढ़ने पर मैं समझ जाता हूँ वे किस खयाल से गुजर रहे हैं और हिन्दी लेखन के पीछे उनकी कौन सी तड़प छिपी हुई है।

भारतीय लेखक अपनी जमीन की बात लिखते हैं और इसी तरह मॉरिशस के लेखक अपनी जमीन के प्रति जुझारू बने हुए हैं। पर यह भी सच है अब यहाँ हिन्दी लेखन बहुत उदासीनता का सामना कर रहा है। बहुत कम लोग हिन्दी में लेखन कर रहे हैं। लोगों का दोष भी नहीं। हिन्दी से यहाँ नौकरी मिलने की कोई खास संभावना नहीं है। मेरी हालत ऐसी है लेखन का मुझे शौक है और मैं सिर झुकाये इसमें लगा रहता हूँ। यह एक जज्बा है, बल्कि जज्बा ही है।

प्रश्न- आपकी रचना शैली मुख्यतः यथार्थ पर आधारित है। किसी भी देश या प्रदेश के इतिहास को प्रस्तुत करने में साहित्य पर यथार्थ और कल्पना की अनिवार्यता है इस विषय पर आप का विचार क्या है?

- यथार्थ और कल्पना के समन्वय से ही लेखन निभता है। कोई नहीं कह सकता वह मात्र यथार्थ से लेखन कर सकता है या कोई कल्पना से लेखन का मीनार खड़ा कर लोगा। मैं अपना ही एक उदाहरण मैं देता हूँ। मुझे एक भिखारी दिख जाने पर मेरे मन में आने लगे इस पर मैं एक कहानी लिख सकता हूँ। यथार्थ यह तो हुआ मैंने भिखारी को देखा तो मेरे मन में लेखन का भाव आया है। यहाँ से आगे का काम कल्पना से चलना शुरु होता है। भिखारी से कुछ पूछा नहीं लेकिन फिर भी उस पर कहानी लिख रहा हूँ। मेरे ध्यान में वही भिखारी हो, लेकिन मैं अपने अनुरूप एक भिखारी गढ़ लूँगा। तो यह गढ़ने का काम कल्पना से ही होता है। कभी ऐसा होता है कुछ देखने पर मन में आने लगे इस पर लिखा जा सकता है। पर जो देखा उससे कुछ पूछा तो नहीं, लेकिन फिर भी लिखा। लेखन की सच्ची बात यह है कल्पना इसके लिए बहुत काम आती है। कल्पना में जितने प्रखर हों उसी हिसाब से बड़े लेखन बन सकते हैं।

  आपने मेरी जीवन शैली देखी नहीं, लेकिन मेरे लेखन से आपने अंदाजा लगाया मेरी रचना शैली यथार्थ पर आधारित होती है जो कि सत्य ही है। मैं जो देखता हूँ और उसका मेरे दिल पर गहरा असर होता है तभी उस पर लेखन के लिए मैं अपनी मनोभूमि तैयार करता हूँ। मुझे लगता है मेरे भीतर करुणा होती है, प्रेम होता है और इससे भी आगे मनुष्यता होती है। तो

मेरे भीतर जो है या जो होने की मैं अनुगूंज अनुभव करता हूँ वही अपने लेखन में उतारने की मैं कोशिश करता हूँ। अपनी बात उसी पर लौटाता हूँ मैंने अपनी कल्पना शक्ति को बहुत तराशा है। मुझे फक्र है जिस वस्तुस्थिति के लिए कलम हाथ में थामता हूँ कल्पना मेरा साथ देने लगती है और उसी तारतम्य से लेखन आगे बढ़ता जाता है।

प्रश्न- आप की कहानियों में मुख्यतः अंतिम चरण में आप ने अलग शैली को स्वीकार किया होगा कि जो सम्पूर्ण कहानी को एक नया मोड़ प्रदान करते है।इस तरह की शैली, कहानी का कथानक या खाका पहले से तय करने के पश्चात उसके अनुसार कहानी रचते हैं या लेखन के समय तारतम्य बनता चलता है ?

- कहानी के संदर्भ में मैं निश्चित रूप से मैं कह नहीं सकता। एक कहानी लिखने के पीछे मन के तार किस रूप में खनकते हों। मैं ऐसा तो मानता हूँ कहानी शुरु करना मेरे लिए कठिन होता है, लेकिन उसे आगे बढ़ाने में मुझे कोई खास दिक्कत होती नहीं है। बात यह है कहानी लिखने की प्रक्रिया में वह बनती जाती है और लगने लगता है उसका अंत कैसा होने वाला है। पर यह भी मेरे लिए अंतिम नहीं होता। अंत में आने पर पूरी कहानी मेरी नजर में होती है और यहाँ मुझे लगता है इसका अंत तो इस प्रकार से होना चाहिए। कहानी के तीन भाग इस तरह से होते हैं उसका आरंभ होता है, फिर मध्य और तद्पश्चात उसका समापन। कभी मुझे कहानी का मध्य ही पहले मिल गया है और उसे ही मैंने लिखना शुरु कर दिया है। कभी अंत पहले मिला तो पीछे पलट कर उसे आरंभ कर दिया। मेरा कहने का मतलब है कहानी मैं कहीं से भी शुरु कर देता हूँ और लेखन की प्रक्रिया में उस पर पनपने से दृष्टि रखता हूँ।

  आपने शैली की बात की है जो मुझे बहुत अच्छी लगी। मैं शैली पर बहुत ध्यान देता हूँ। मेरी कोशिश यह रहती है जो मेरी कहानी है वह मेरी ही कहानी लगे। अपनी शैली बनाने के लिए एक तो मैं बहुत पढ़ता हूँ और दूसरी बात यह है अपने देश और काल के हिसाब से मैं अपनी शैली गढ़ता हूँ। किसी भी देश का आदमी मेरी रचना पढ़े तो उसे लगे वह मॉरिशस की रचना पढ़ रहा है।

प्रश्न- आप किन कथाकारों या साहित्यकारों अधिक प्रभावित रहे हैं, विशेषकर जिन्होंने मज़दूर जीवन को आधार बनाया?

- मेरे देश में अंग्रेजी की अपेक्षा फ्रेंच का अधिक बोलबाला है। मैंने अपने को फ्रेंच साहित्य से अधिक प्रभावित पाया है, लेकिन यहाँ आपके प्रश्न के आधार पर भारत के हिन्दी लेखकों पर

अपना ध्यान केन्द्रित कर रहा हूँ। मेरे भीतर आज भी भारतीय संस्कृति जीवित है उसी तरह हिन्दी भी मेरी रग-रग में बसी हुई है। मैंने कलम के सिपाही प्रेमचंद से ही मज़दूर जीवन के बारे में लिखना सीखा है। मैंने जब से प्रेमचंद का 'गोदान' उपन्यास पढ़ा, मुझे अपने देश के मज़दूर जीवन पर लिखने के लिए एक तरह व्याकरण मिल गया। मैंने मज़दूर जीवन पर बहुत लिखा है। मेरे छः खंडों का पथरीला सोना उपन्यास मेरे देश के मज़दूर जीवन पर ही आधारित है। अपने 'पथरीला सोना' उपन्यास पर मुझे श्रीलाल शुक्ल स्मृति, इफको साहित्य सम्मान 2017 मिला जिसमें ग्यारह लाख रुपये संलग्न थे। मजदूरों पर लिखने वाले प्रेमचंद मुझे इतने प्रिय रहे हैं कि मैं उनका लमही शहर देखने चला गया था।

प्रश्न- सर, विदेश में जाकर कई भारतीय अपनी मातृभाषा में साहित्यिक रचना करते है, आप की राय में प्रवासी हिंदी साहित्य क्या है? प्रवासी हिंदी साहित्यकार कौन है ?

- एक बात स्पष्ट हो जानी चाहिए, प्रवासी का अर्थ क्या होता है। इसका सही अर्थ तो होता है, लेकिन मॉरिशस के संदर्भ में इस शब्द को उलझा कर रख दिया गया है। आपके ही प्रश्न में देख रहा हूँ 'विदेश में जा कर' जो स्वयं में बहुत भ्रामक है। मेरे परदादा सन् 1834 में मॉरिशस आये थे और मैं यहाँ चौथी पीढ़ी से हूँ। मॉरिशस में मेरा जन्म हुआ और यह मेरी मातृभूमि है। पर अपनी मातृभूमि में मेरी भाषा यहाँ की हो कर वह आयात ही है। बात यह है मॉरिशस तब जंगल था। भारतीय, अफ्रिकी और पश्चिमी यहाँ आये और उनके साथ जो भाषाएँ यहाँ आयीं, वे ही भाषाएँ यहाँ की अपनी भाषाएँ हो गयीं। हाँ, मॉरिशस में एक भाषा की व्युत्पति हुई है, उस भाषा का नाम कृओल है। वह भाषा यहाँ सभी लोग बोलते हैं, बल्कि एक वही देशी भाषा है।

  अब प्रवासी शब्द के बारे में लिख रहा हूँ। मैं प्रवासी नहीं हूँ। पर जैसा कि मैंने कहा यह शब्द चला दिया गया है और हम इसके शिकार होते चले गये हैं। भारत से जो लोग इंग्लेंड अमेरिका वगैरह देशों में गये और वहाँ से हिन्दी में लेखन कर रहे हैं वे प्रवासी हिन्दी साहित्यकार हुए। पर मैं नहीं क्योंकि मेरा जन्म यहाँ हुआ हूँ। प्रवासी का अर्थ होता भी तो यही है एक देश से निकल कर दूसरे देश में जा बसना। पर जैसा कि मैंने कहा हमारे साथ भी प्रवासी शब्द चला दिया गया है और इससे हम मुक्त हो भी नहीं सकते।

प्रश्न- मॉरिशस जैसे देश में भारत से आए हुए लोगों को कभी कभी हाशिएकरण का शिकार या नस्ल भेद का शिकार होना पड़ता हैं? मुख्यतः स्त्री जीवन भारत से तुलना करते समय कैसे भिन्न रहता है ?

- हाशियेकरण वाली बात अब मॉरिशस में लागू नहीं होती। यह सही है गोरों ने अपना दबदबा बनाये रखा है, लेकिन वे किसी को अपमान का एक शब्द भी नहीं कह सकते। मैंने पिछले प्रश्न के उत्तर में लिखा मॉरिशस में सब का स्थान एक जैसा है। इस प्रश्न में स्त्री की बात होने से मैं यह कहूँगा शायद भारत की महिलाओं से यहाँ की महिलाओं की तुलना नहीं की जा सकती। मैं अकसर सुनता हूँ भारत में स्त्रियों पर लूट मचती है दहेज के लिए तकाजा किया जाता है वगैरह-वगैरह। मॉरिशस में शायद ही महिलाओं के बारे में अप्रिय घटना घटती हो। दहेज का प्रचलन हमारे यहाँ नहीं है। बेटियाँ पढ़ लें और नौकरी करें उनकी शादी बड़े प्रेम से हो जाती है।

प्रश्न- रचनाकार के लिए सामाजिक दायित्व का बोध बहुत जरूरी माना जाता है। इस विषय पर आप की राय जानना चाहती हूं।

- यदि लेखक सामाजिक दायित्व का बोध अपने कंधे पर ले कर न चले तो वह लेखक अपूर्ण रहता है। लेखक ऐसे भी हुए हैं जो समाज को लिख -- लिख कर इतना उसमें डूब गये कि अपन जीवन ही उन्हें संदेहास्पद लगने लगे और उन्होंने आत्म हत्या कर ली। यह बोध बहुत भयानक और विकराल होता है। इस बात में झूठ नहीं यह बोध लेखक को मार देता है। पर उस तरह के लेखक अब होते हों यह चिराग ले कर ढूँढना पड़ेगा।

  लेखकों से विचार बनते हैं, लेकिन वे विचार दिखायी नहीं देते। वे विचार हवा में तैरते रहते हैं और समय की तलाश करते रहते हैं। जिस दिन वे विचार गर्जन के साथ विस्फोटित होते हैं देश की आत्मा हिल जाती है। फ्रांस, जर्मनी, रूस ये सारे देश इस बात के गवाह हैं।

  मैं ऐसा मानता हूँ मेरे भीतर सामाजिक दायित्व का बोध कूट कूट कर भरा हुआ है। पर मैं यह भी जानता हूँ मेरे लेखन से कुछ होने वाला नहीं है। कौन पढ़ रहा हो जो मानेगा मैं क्या चाहता हूँ। पर मेरी तसल्ली मेरे लिए सर्वोपरि है। मेरे भीतर यह बोध बना हुआ है और मैं इसी के साथ जी रहा हूँ।

प्रश्न- मॉरिशस की युवा पीढ़ी हिंदी साहित्य में विशेष रुचि रखते हैं? भारत से बाहर रहने वाले भारतीय परिवारों की आगामी पीढ़ी से आप क्या कहना चाहते है ?

- मॉरिशस की युवा पीढ़ी हिन्दी के मामले में उतने ही सन्नद्ध हैं जितने से उनका काम चल जाये। यह पीढ़ी रोजी रोटी के लिए हिन्दी पढ़ रही है, लेकिन बात यह है कि हिन्दी से यहाँ काम की अधिक संभावना बन नहीं पाती है। ऐसे में इस पीढ़ी का हक है अंग्रेजी फेंच की ओर उन्मुख होते जायें। पर मेरा विश्वास है हिन्दी से यहाँ प्रेम बना रहेगा। पूजा पाठ और तमाम सांस्कृतिक अनुष्ठानों में हिन्दी की आवश्यकता पड़ने से भी हिन्दी के रह जाने की बहुत संभावनाएँ हैं। भारत के लोग मॉरिशस को भारत के चश्मे से देखने की भूल न करें। यहाँ के अपने कायदे कानून हैं और भाषाओं के अपने प्रतिमान हैं। उसी हिसाब से काम चलता है और ठीक ही चल रहा है।

  प्रश्न में यह भी पूछा गया है भारत से बाहर रहने वाले भारतीय परिवारों की आगामी पीढ़ी से मैं क्या चाहता हूँ। वह पीढ़ी अभी अनागत होने से मैं कुछ कह नहीं सकता। पर जो पीढ़ी अभी है और उनकी संतानें उनके सामने हैं उनके बारे में मैं कुछ कहने की कोशिश कर रहा हूँ। भारत के जो लोग पाश्चात्य और अमेरीका कनाडा आदि देशों में जा बसे हैं और हिन्दी में लेखन करते हैं कमोबेश सभी से मेरी जान पहचान है। मैंने अकसर फेसबुक में उनसे पूछ है क्या वे अपने बच्चों को हिन्दी पढ़ाने के साथ हिन्दी में लिखने के लिए प्रेरित करते हैं? इसका उत्तर देने से वे मौन रह जाते हैं। मतलब साफ है जो है नहीं उसका भी उनके पास हो नहीं सकता। पर अच्छा होगा भविष्य के लिए एक सुनगुनाहट बने। हिन्दी का जरूर भला होगा। बाकी मैं मॉरिशस के लिए भी यही चाहत रखता हूँ। पूर्वजों से हमें जो मिला है उसे हम सुरक्षित रख लें।

  धन्यवाद महोदय !

श्रीना एस, शोधार्थी, कोच्चिन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, केरल
संपर्क :7012049428
Email: sreenasreenivasan11@gmail.com